P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-9* May- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय बाल साहित्य : समस्या व चुनौतियाँ

अंशुमान सिंह
वरिष्ठ शोध छात्र,
हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

सारांश

किसी भी साहित्य को सुगमता से प्रसिद्धि नहीं मिली। बात जब बाल साहित्य की हो तो यह तथ्य और भी प्रमाणिक हो जाता है। क्योंकि बाल साहित्य की सीमा नैतिकता, सकारात्मकता और अश्लील मनोरंजन की ड्योढ़ी को पार नहीं कर पाई। कमोवेश यही स्थिति आज भी बनी हुई है।

अधिकतर बाल साहित्यकारों का यह मानना है कि कभी भी हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा में बाल साहित्य को आश्रय नहीं दिया गया और न ही इतिहास में उस पर कोई ध्यान दिया गया।

भारतीय बाल साहित्य ने समाज के पिछड़े व मुख्य धारा से वंचित समाज के ही व्यक्तियों को अपनी कहानी का मुख्य पात्र बनाया जो कि गड़ेरिया, लकड़हारा या श्रमिक ही होता था। इन पात्रों को बाल साहित्य के रचनाकारों ने सच्चा, ईमानदार व वीर पुरूष बताया। ऐसा क्यों किया गया ? यह समझ से परे है। जहाँ तक मेरी समझ है कि, समाज में तुच्छ समझे जाने वाले इन वर्गों के लिए बालमन में एक आदर व सम्मान का भाव जगे, भविष्य में बच्चे इनकी उपेक्षा न करें। संभव है कि रचनाकार का यही लक्ष्य रहा हो। प्रश्न यह है कि क्या सभी बाल साहित्यकार अपने इस प्रयास में सफल हुये होंगे ? बाल साहित्य का रूप–रंग, व कलेवर दिन प्रतिदिन परिवर्तन की सीढ़ी चढ़ता रहा। परन्तु यह सत्य है कि, बाल साहित्य का विश्लेषण करने वाले आलोचक अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। हिन्दी ही नहीं, बांग्ला, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी आदि भाषाओं में बाल साहित्य अधिक मात्रा में लिखा गया किन्तु बाल साहित्य का विश्लेषण करने वाले आलोचनात्मक लेख मात्रा में बहुत कम हैं या लिखे ही नहीं गये।

अतः यह कहा जा सकता है कि बाल साहित्य को अभी भी मुख्य धारा में वह स्थान नहीं मिला। इसके पीछे क्या कारण है इस पर अनिवार्यतः विचार होना चाहिए।

मुख्य शब्द : भारतीय बाल साहित्य, थेरिपी, परिवर्तनकारी युग।

प्रस्तावना

आज तक हमने जब भी बाल साहित्य की बात की है, हमने बाल साहित्य को एक 'थेरिपी' से ज्यादा कुछ नहीं माना है। हम सभी यह मान बैठे हैं कि बाल साहित्य लिखने का अर्थ है– बच्चों को अच्छी सीख देना, उन्हें नैतिकता का पाठ पढ़ाना कि– अपने से बड़ों का सम्मान करो, माता–पिता की सेवा करना ही सबसे बड़ा कर्म है, झूठ बोलना पाप है, किसी को सताना नहीं चाहिए आदि। ऐसी बात नहीं है कि यह स्थिति सिर्फ हिन्दी के बाल साहित्य के साथ है। कमोवेश ऐसी स्थिति अंग्रेंजी के बाल साहित्य के साथ भी है। मारिया एजबर्थ और मैरी वाल्सटोन क्राफ्ट से लेकर जुड़ी ब्लूम तक यह समस्या बाल साहित्य के साथ हमेशा बनी रही है। मसलन, जमाना कैसा भी हो गया हो, हम अपनी सोच में 'आर्थोडौक्सिथल' ही बने रहना पसन्द करते हैं। कमोवेश बाल साहित्य की स्थिति तो ऐसी ही है, चाहे हम 'पंचतंत्र' के युग में रहे हों या फिर 'प्रॉब्लम नावेल'के जमाने में, हम सब बच्चों को उपदेशात्मक घुट्टी पिलाते ही रहे हैं।

सत्तर–अस्सी के दशक के दौरान अमेरिका में 'प्रॉब्लम नावेल' के नाम से जैसे एक परिवर्तनकारी युग की शुरूआत हुई थी। इस दौर में जो भी बाल साहित्य लिखे गये उसे लेकर अमेरिका में खूब बहस हुई। बुद्धिजीवियों में यह बहस हो रही थी कि– बच्चों को क्या सूचना दी जाए और किससे उनको दूर रखा जाए। जब जुड़ी ब्लूम का उपन्यास 'फॉरएवर' छपकर आया था तब केवल अमेरिका ही नहीं वरन् पूरी दुनिया में बाल साहित्य की विषय–वस्तु बहस का मुद्दा बन गई थी।

'कैरीज वॉर' जैसी मशहूर पुस्तक की लेखिका नीना बाउडेन कहती हैं कि– 'बाल साहित्य को इस नजरिये से देखा जाना चाहिए कि इसकी गुणवत्ता क्या है और यह कितना रोचक है, न कि इस लिहाज से देखा जाना चाहिए किइसमें सामाजिक सच का कितना खुलासा हुआ है और इसने किन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है।'

बाल साहित्य की बहुत सारी सीमाएँ भी रही हैं। बाल साहित्य में पुनरावृत्ति की प्रवृत्ति प्रायः ही देखने को मिल जाती है। पुनरावृत्ति की प्रवृत्ति होने के कारण प्राचीन बाल साहित्य में कई बार 'क्लीशे' की भी स्थिति बन पड़ी दिखती है जहाँ सियार धूर्त होता है और बंदर चालाक। पशु–पक्षी भी अपने मानवयुक्त गुणों के साथ उपस्थित रहे हैं। जिसमें बाल कंगन दिखाकर लालची इंसान को अपना शिकार बनाता है। तथापि अंततः यह अवश्य ही स्थापित करते हैं कि 'लालच बुरी बला' एवं 'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए'। अधिकांशतः विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि पुनरावृत्ति दोष का होना 'बाल साहित्य' को बासी बना देता है। फिर भी यह एक तथ्य है कि बच्चे एक ही कहानी को कई बार सुनते हैं वो भी पूरी तन्मयता से। इसलिए यह कहना कि बाल साहित्य में पुनरावृत्ति का होना एक दोष है, बहस का मुद्दा है।

साहित्यावलोकन

बाल साहित्य की परंपरा अत्यन्त प्राचीन है। एक तरफ जहाँ पंचतन्त्र व हितोपदेश जैसी शिक्षाप्रद कहानियों का कोश है वहीं कविता के क्षेत्र में ''किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत'' वाले सूरदास व ''ठुमुकि–ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई'' वाले तुलसीदास ने बाल लीलाओं की मनोहर झांकी प्रस्तुत कर बाल साहित्य कोश की वृद्धि ही की है। दूसरी तरफ दादी–नानी की लोक प्रचलित कथाओं ने आज भी एक सुदृढ़ परम्परा बरकरार रखी है। इस परंपरा में आगे देखा जाय तो आधुनिक काल में गैर बाल साहित्यकारों व प्रमुख बाल साहित्यकारों ने अपना विशिष्ट योगदान दिया।

गैर बाल साहित्यकारों में प्रमुख रूप से प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, अमृतलालनागर, सुभद्रा कुमारी चौहान, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अमरकान्त व भीष्म साहनी आदि प्रमुख रचनाकार हैं जिन्होंने बाल साहित्य रचने के ध्येय से रचना नहीं की फिर भी ये बाल साहित्य की परंपरा में एक मील के पत्थर साबित हुए।

इग्लैंड में बैठे–बैठे हिन्दी में फ्रेडरिक पिंकाट ने बाल साहित्य पर विशेष काम किया। 'बाल दीपक' नाम से उन्हीं की किताब उस समय बिहार के स्कूलों में पढ़ाई जा रही थी। यह एक बड़ी क्रान्ति साबित हुई।

बाल साहित्यकार के प्रमुख हस्ताक्षरों की बात की जाय तो इनमें श्री प्रसाद, विनायक, खगनिया, प्रकाश मनु, शकुन्तला सिरोठिया, व दिविक रमेश आदि प्रमुख हैं। जिनके लेखनी ने बाल सुलभ स्मृतियों को हमारे अन्दर जीवित रखा है।

चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट और शिक्षा भारती जैसी संस्थाओं ने बाल साहित्य को एक नया आयाम दिया, एक जीवन दिया। इसी जीवन में आज के बाल साहित्यकार अपनी लेखनी से प्राण फूंक रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

बाल साहित्य लिखने का मूल उद्देश्य बाल जिज्ञासा को पूरा कराना होना चाहिए– गुणसागर सत्यार्थी

सत्यार्थी जी के कथन पर ध्यान दिया जाय तो हम देखते हैं कि दादी–नानी की कहानियाँ इस क्षेत्र में अग्रगण्य हैं क्योंकि बच्चों की उमड़ती जिज्ञासाओं को शान्त करने में दादी–नानी की शिक्षाप्रद कहानियाँ काफी हद तक सफल रही हैं। बाल साहित्य मुख्य रूप से हितोपदेश, पंचतन्त्र, नन्दन, चंपक, बाल भारती तक ही सीमित रह गयी। आगे इन्हीं का कुछ विकसित रूप देखने को मिला वो भी कहानियों में। कुछ कहानीकारों ने बच्चों को केन्द्र करके कहानियाँ लिखी थी जैसे–प्रेमचन्द, रवीन्द्र नाथ टैगोर, भीष्म साहनी, अमरकान्त आदि किन्तु ये मूलतः बाल साहित्यकार नहीं थे। इन्होंने बालमन के सभी पक्षों पर उतना ध्यान नहीं दिया जितना की बाल साहित्यकार के रूप में प्रकाश मनु, जय प्रकाश भारती, खगनिया, दिविक रमेश आदि ने ध्यान दिया। प्रश्न यह भी है कि बाल साहित्यकार क्या कहानियों के माध्यम से सिर्फ शिक्षा ही प्रदान करते हैं या उन्होंने इस सीमा का अतिक्रमण भी किया है।

दरअसल, बाल साहित्य का उद्देश्य बाल पाठकों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु उन्हें आज के जीवन से परिचित भी कराना है। बाल साहित्य अपने इस उद्देश्य में कितना सफल है ? बाल साहित्य को किन–किन समस्याओं और चुनौतियों से गुजरना पड़ा है ? इस लेख का उद्देश्य इन बातों की एक सटीक जानकारी प्रस्तुत करना है।

भारतीय बाल साहित्य की एक सबसे प्रमुख विशेषता यह रही है कि उसने हमेशा ही पिछड़े व मुख्यधारा से वंचित समाज व शक्ति को ही केन्द्र में रखा है। भारतीय बाल साहित्य ने प्रायः ऐसे व्यक्ति को अपना केन्द्रीय पात्र बनाया है जो या तो गड़ेरिया, मजदूर या लकड़हारा है और वह एक सच्चा, ईमानदार व वीर पुरुष होता है। बाल कहानियों में अधिकांशतः यह भी दिखाया गया है कि उसे कोई सुन्दर सी राजकुमारी प्रेम करने लगती है, और कहानी के नायक को कोई बड़ा खजाना या कोई गड़ा हुआ धन प्राप्त हो जाता है। कहानी में ध्यान देने वाली बात यह भी है कि राजा अपनी पुत्री का विवाह इस नायक के साथ कर देता है, आज के 'खाप पंचायत' या 'ऑनर किलिंग' के तहत उसकी हत्या नहीं कर देता।

बाल साहित्य की एक प्रमुख विशेषता है कि बाल साहित्य एक 'खुशनुमा फैंटेसी' गढ़ते हैं और इसी के इर्द–गिर्द कथावस्तु का ताना–बाना बुनते हैं। बाल साहित्य में हमेशा से यह माना जाता है कि बच्चों का प्रिय विषय फैंटेसी है। देवकीनन्दन खत्री के 'चन्द्रकांता संतति', विष्णु शर्मा के 'पंचतंत्र' और जे.के. रॉलिंग के 'हैरी पॉटर' एवं विदेशी फिल्म 'होम अलोन' की अभूतपूर्व सफलता का यही रहस्य है। यह बात सत्य है कि भारतीय बाल साहित्य आशावाद का साहित्य है जो बच्चों को मनोरंजन के साथ–साथ उनमें आशा के भाव भी भरता है और कहानियों के माध्यम से उनमें ऐसी प्रेरणा भरता है कि बच्चे किसी भी परिस्थिति में जीवन के कठिन से कठिन

संघर्षों का सामना कर सकें और मजबूत बनें। मानव जीवन में बाल साहित्य की महत्ता इस बात से समझी जा सकती है कि 'पंचतंत्र' का जितना भी अुनवाद विश्व भर की भाषाओं में हुआ है उतना अनुवाद न ही 'गीता' न ही, 'कुरान शरीफ' और न ही 'बाइबिल' का हुआ है।

अधिकतर बाल साहित्यकारों का यह विचार है कि हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा बाल साहित्य को प्रश्रय नहीं देती है और न ही इतिहास में उनकी कोई नोटिस ली गई। आलोचकों ने भी बाल साहित्य की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया है। मैनेजर पाण्डेय ने अपने साक्षात्कार में स्वीकार किया है कि बाल साहित्य की आलोचना की कोई स्थायी परम्परा नहीं है। ऐसा लगता है कि आलोचकों ने बाल साहित्य का अर्थ–'कू–कू करती आई कोयल' और 'भों–भों करता आया कुत्ता' से आगे कुछ नहीं लिया है। हिन्दी साहित्य के प्रमुख आलोचक इस बात को नकारते हैं कि बाल साहित्यकारों ने रोज रात जब चंदा मामा से आगे की भी रचनाएँ लिखी हैं। बांग्ला ऐसी भाषा है जिसमें बच्चों के लिए खूब लिखने वाले रवीन्द्रनाथ टैगोर तक ने भी बाल साहित्य की आलोचना को कोई विशेष महत्व नहीं दिया है।

सिर्फ बांग्ला ही नहीं, मलयालम, तेलगु, कन्नड़, पंजाबी आदि भाषाओं में तो बाल साहित्य अधिक मात्रा में लिखा गया है परन्तु बाल साहित्य का विश्लेषण करने वाले आलोचनात्मक लेखों की मात्रा या तो बहुत कम है या तो लिखे ही नहीं गये। रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने बाल पत्रिका के नाम पर 'बालक और 'चुन्नू–मुन्नू पत्रिकाएँ निकाली और वैशाली के लालगंज में एक समृद्ध पुस्तकालय में इन पत्रिकाओं के साथ उनके द्वारा कई पुरानी बाल–पत्रिकाओं के अंक संग्रहीत और सुरक्षित रखे हुए हैं।

समग्र अध्ययन से इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा ने बाल साहित्यकारों पर उस प्रकार का ध्यान नहीं दिया जिसकी अपेक्षा उन्हें थी। क्या यह जाँच–पड़ताल नहीं की जानी चाहिए कि आज के बाल साहित्यकार भी उसी तरह रचनाएँ कर रहें हैं और उनकी रचनाएँ भी बाल मन को उसी तरह आकर्षित कर रही हैं या बाल मन में उसी तरह रची–बसी हैं जिस तरह महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, गोपाल सिंह नेपाली, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं रघुवीर सहाय आदि की रचनाएँ; हृदय के अन्तःस्थल में स्व बस गयी है। प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, निराला, भीष्म साहनी आदि की रचनाएं ने भी बाल साहित्य की रचनाएँ की हैं और प्रेमचन्द की 'गुल्ली–डंडा' एवं 'ईदगाह',जैनेन्द्र का 'खेल', भीष्म साहनी की 'पाली', गुलेरी की 'उसने कहा था' जैसी बाल कहानियाँ तो आज तक स्मृतियों में जिन्दा हैं और ध्यान देने योग्य बात है कि हिन्दी साहित्य की आलोचना और इतिहास दोनों ने इसको खूब केन्द्र में लिया है।

अद्यतन बाल साहित्य में जो कुछ भी लिखा जा रहा है, उन पर प्रकाश मनु, कृष्ण शलभ, श्याम सिंह, दिविक रमेश, रमेश तेलंग, सुशील शुक्ल और उमेश चौहान ने सोदाहरण विस्तरित विश्लेषण प्रस्तुत किया है। डॉ. प्रमोद दुबे, शोबना निझावन और ऊषा यादव ने 'पंचतंत्र पर एक विद्वतापूर्ण और ज्ञानोपयोगी लेख लिखा है। अन्य भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य पर बातें कटे तो पंजाबी भाषा के लिए जसबीर भुल्लर, मलयालम के लिए डॉ. ए. यू. वर्गीश, मराठी में संजीवनी कुलकर्णी और बांग्ला के लिए निशांत ने अच्छे लेख लिखे हैं। अन्य लेखों की बात की जाय तो लाल्टू, डॉ. राजेश हर्षवर्द्धन और डॉ. अमिताभ राय चौधरी ने बाल साहित्य को केन्द्र में रखकर बहुत सारी रोचक बातें की हैं। मीडिया में भी बच्चों को ध्यान में रखकर कई फिल्मों का निर्माण हुआ है। यथा– चिल्लर पार्टी, तारे जमीं पर, मकड़ी, रिश्ते, आबरा का डाबरा, स्टैनले का डब्बा, माई फ्रेण्ड गनेशा, हनुमान, घटोत्कक्ष आदि। ये कार्यक्रम इस बात का प्रमाण है कि आज मीडिया ने बाल–मनोरंजन के नए आयामों को खोजने की कोशिश की है।

वर्तमान में यदि किसी ऐसे रचनाकार का नाम लिया जाये जिसने विशेष रूप से बाल हास्य नाटक के क्षेत्र में कार्य किया है तो वे हैं हाल फिलहाल में दिवंगत हुए के.पी. सक्सेना। उनके बाल हास्य नाटकों में प्रमुख हैं– दस पैसे के तानसेन, फकनूस गोज टू स्कूल, चोचे नवाब, अपने–अपने छक्के आदि। इनका यह अविस्मरणीय योगदान बाल साहित्य के लिए एक दैवीय वरदान के सापेक्ष है।

निष्कर्ष

यह कहना किंचित भी गलत न होगा कि बाल साहित्य अन्य साहित्यिक विधा के समान अभी उस फलक तक नहीं पहुँच सका है जहाँ तक उसे पहुँचना चाहिए था। वर्तमान समय में बाल साहित्य के पक्ष में जो भी कार्य हो रहे हैं वो आने वाले समय में एक सुखद परिणाम प्रदान करेंगे और बाल साहित्य का अनन्त तक विस्तार करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 अवधेश चन्द्र मिश्रा, बाल साहित्य के जीवन मूल्य (लेख), हिन्दुस्तानी त्रैमासिक, भाग 76, अंक 2, अप्रैल–जून 2015, पृष्ठ 114*
2. *पल्लवी प्रकाश, हिन्दी बाल साहित्य : एक विवेचन (लेख), आजकल, नवम्बर, 2015, पृष्ठ 8*
3. *पल्लवी प्रकाश, हिन्दी बाल साहित्य : एक विवेचन (लेख), आजकल, नवम्बर, 2015, पृष्ठ 7*
4. *पुष्पा बरनवाल, बाल रंगमंच : कुछ मुद्दे – कुछ विमर्श (लेख), आजकल, नवम्बर, 2015, पृष्ठ 9*
5. *पल्लवी प्रकाश, हिन्दी बाल साहित्य : एक विवेचन (लेख), आजकल, नवम्बर, 2015, पृष्ठ 8*
6. *डॉ0 अरूण कुमार वर्मा, मूल्य परक शिक्षा और बाल साहित्य (लेख), हिन्दुस्तानी त्रैमासिक, भाग 76, अंक 2, अप्रैल–जून 2015, पृष्ठ 108*